



वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 3

मार्च, 2024

इस अंक में

- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम एवं प्रवासी मंच कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व पुस्तक मेला एवं अन्य गतिविधियाँ - पृष्ठ : 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा-कविता : पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

आगामी अंक में

- फीजी में हिंदी शिक्षण : स्थिति और संभावनाएँ (07.04.2024)
- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी से संवाद (14.04.2024)

भूगोल बाँटता है और संस्कृति जोड़ती है - डॉ. सच्चिदानंद जोशी



डॉ. तोमियो मिजोकामि जी के स्वागत में प्रवासी भवन में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इंदिरा गांधी सांस्कृतिक कला केन्द्र के सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि डॉ. तोमियो मिजोकामि जी के व्यक्तित्व से यह उक्ति चरितार्थ होती है कि भूगोल बाँटता है और संस्कृति जोड़ती है।

दिनांक 27 फरवरी, 2024 को अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् और वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा प्रवासी भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली में डॉ. तोमियो मिजोकामि के सम्मान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। संदर्भ था डॉ. वेदप्रकाश सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'डॉ. तोमियो मिजोकामि - व्यक्तित्व और कृतित्व'। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंदिरा गाँधी कला केन्द्र के निदेशक डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने की। कार्यक्रम में वरिष्ठ विद्वान डॉ. अशोक चक्रधर, डॉ. रविंद्र कुमार, अनिल जोशी, नारायण कुमार, डॉ. हरजेन्द्र चौधरी, पुस्तक के लेखक डॉ. वेद प्रकाश सिंह, सुश्री जया वर्मा, डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कथाकार - कवयित्री अलका सिन्हा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन वैश्विक हिंदी परिवार, दिल्ली के संयोजक श्री विनयशील चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए डॉ. मिजोकामि ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण संस्मरण साझा किए। उन्होंने विशेष रूप से प्रसिद्ध गायिका शुभा मुद्गल और जापानी विद्यार्थियों से देश - विदेश में हिंदी नाटक करवाने संबंधी अपने संस्मरण साझा किए। उनके संस्मरण रोचक, दिलचस्प और प्रेरक थे। पुस्तक के लेखक डॉ. वेद प्रकाश सिंह ने पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी और उसमें भारतीय कौसलावास से मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने डॉ. मिजोकामि को भारत और जापान के बीच सेतु बताया। डॉ. अशोक चक्रधर ने हिंदी के अंतरराष्ट्रीय विकास में उनके महत्व को रेखांकित किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग के डॉ. रविन्द्र ने उनकी बहुभाषिकता और विभिन्न विधाओं पर अधिकार के संबंध में विशेष रूप से बताया। लेखक अनिल जोशी ने कहा कि वे इस समय हिंदी के अंतरराष्ट्रीय शिखर व्यक्तित्व हैं। वे भाषा के प्रति प्रतिबद्ध ही नहीं हैं, वे भाषा को जीते हैं, इसलिए उनकी भाषा और जीवन में अंतर नहीं। वरिष्ठ लेखक डॉ. हरजेन्द्र चौधरी ने इस अवसर पर उनके द्वारा लिखी कहानियों का विशेष उल्लेख किया। नारायण कुमार जी ने बताया कि डॉ. तोमियो मिजोकामि जी की पुस्तक की भूमिका तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने की। सुश्री जया वर्मा ने डॉ. मिजोकामि जी के वैश्विक योगदान की प्रशंसा की। कथाकार अलका सिन्हा ने उनकी मासूमियत का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हें भारत की भाषा और परिधान बचपन से ही पसंद था। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी उन्हें सम्मानित कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। बरूण कुमार जी ने भारत और जापान के बीच के पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ करने में उनके योगदान की सराहना की। डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने इस अवसर पर जापान के अपने संस्मरण साझा किए।

कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय में जापानी भाषा की प्रमुख सुश्री उनीता सच्चिदानंद, जवाहर लाल विश्वविद्यालय में जापानी भाषा की सुश्री तनुश्री, गगनांचल के संपादक श्री रविशंकर, दिल्ली विश्वविद्यालय की डॉ. शैलजा, डॉ. दीपमाला, डॉ. राजेश गौतम, डॉ. राजकुमार, डॉ. विवेक शर्मा, डॉ. गुरप्रीत, शैलेन्द्र, व विभिन्न कॉलेजों के शोध विद्यार्थियों ने भाग लिया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में रचना पाठ



अतुल कोठारी

कि लोक साहित्य में संस्कृति बसती है और बोलियों से ही शब्दावली बनती है। हमें लुप्त होते शब्दों का संरक्षण और भाषाओं का संवर्धन करना चाहिए। उन्होंने आवाहन किया कि आइये, हम सब भाषा की संपदा को बचाएँ। मुख्य अतिथि के रूप में 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी ने शुभ कामनाएँ देते हुए मातृभाषा में शिक्षा की महत्ता को रेखांकित किया और विशेष रूप से भारतीय भाषाओं पर मंडरा रहे संकट से उबरने के लिए क्रमिक विकास की आंचलिक परियोजनाओं की निहायत जरूरत बताई। इस अवसर पर अनेक

अं तराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में देश- विदेश के रचनाकारों का "भारतीय भाषाओं में रचना पाठ" पर एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम 25 फरवरी, 2024 को आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जगदीश व्योम ने सभी को समादर देते हुए कहा

देशों के साहित्यकार, विद्वान- विदुषी, प्राध्यापक, शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

शुरुआत में डॉ. बरूण कुमार द्वारा मातृभाषा दिवस की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए स्वागत किया गया। तत्पश्चात् सिंगापुर से पत्रकार श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव ने संचालन संभाला। आस्ट्रेलिया से जुड़े कन्नौजी साहित्यकार डॉ. सुभाष शर्मा ने भारत से विछोह पर "सौतेली माँ, शीर्षक से वेदनायुक्त रचना सुनाई। उन्होंने दूसरी रचना में सस्वर आल्हा रूप में 'सर्जिकल स्ट्राइक' का वीर रस में वर्णन कर जोश का संचार किया। संयुक्त अरब अमीरात से मलयालम कवयित्री लता रजित ने मातृभाषा की पुकार और माँ की लोरीयुक्त रचना सुनाकर भाव विभोर कर दिया। ब्रिटेन से जुड़ी तेलुगू कवयित्री एवं नृत्यांगना डॉ. रागसुधा विंजमूरी द्वारा मातृभाषा की शोभा का बखान करते हुए 'पंच परमेश्वर' और 'सात समुंदर पार' जैसी अंकीय शैली और मीठी वाणी में भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की गई। अपनी हरियाणवी रचना में कवि नवल पाल प्रभाकर 'दिनकर, ने 'म्हारा हरियाणा प्यारा, भारत में न्यारा, शीर्षक से हरियाणा की भूमि और धरती पुत्रों की वीरता की प्रशंसा की।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में रचना पाठ (पृष्ठ 1 से आगे...)



यूनाइटेड किंगडम से बांग्ला कवयित्री मौसोमा सिन्हा ने प्रेम पर आधारित मनभावना रचना सुनाई। सऊदी अरब से आरती बिमल परीख द्वारा गुजराती में आध्यात्मिक कविता का सुंदर ढंग से वाचन किया गया। उन्होंने अपनी कविता में निजदोषदर्शन हेतु विवश किया। पुरजोर अपील पर संचालन कर रही मैथिली कवयित्री आराधना झा श्रीवास्तव द्वारा मातृभाषा में 'किछ जोड़े, किछ छोड़े' कविता सुनाई गई तथा मानवीय सम्बन्धों की भाषाई गहराई का एहसास कराया गया।

शिकागो से तमिल कवयित्री श्रीमती राजलक्ष्मी कृष्णन ने "माँ के बिना हम अधूरे हैं, शीर्षक से प्रार्थनामय रचना सुनाई। तमिलनाडु में प्रायः अपनी भाषा तमिल को देवी रूप में संज्ञा दी जाती है। अपनी ओडिया रचना में धरित्री प्रियदर्शनी ने अनेकता में एकता का दर्शन कराते हुए मातृभूमि और मातृभाषा को संजोए 'एक- अनेक, शीर्षक से समाँ बाँधा। कवि नलिन शारदा ने 'पंजाब दी गल निराली' अपनी कविता में पंजाब का बखान किया। श्रीमती अलका सिन्हा ने मातृभाषा को नाभिनाल ने जोड़ते हुए भोजपुरी में बेटी बचाओ और बढ़ाओ का संदेश देती संतोषी बेटी की रचना, 'हमार अनुकृति' सुनाकर भाव विह्वल कर दिया।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी रचनाकारों की प्रशंसा की और कहा कि भारत में भाषा सहोदरी और समानताओं के यत्र-तत्र सर्वत्र दर्शन होते हैं। हमारी भाषाएँ जन मन में व्याप्त हैं। निश्चय ही "पहला मोर्चा भाषा का है। उन्होंने अपनी एक उद्घेलित काने वाली रचना सुनाई - 'हैरान परेशान ये हिंदोस्तान है /ये होठ तो अपने हैं/पर किसकी जुबान है?' हँसकर मेकाले ने कल हमसे जब पूछा/तलवार तुम्हारी है/पर किसकी म्यान है ?' अमेरिका से भाषाशास्त्री आचार्य सुरेन्द्र गंभीर ने कहा कि हमें मातृभाषा के सतही ज्ञान की नहीं बल्कि गहन ज्ञान की निहायत जरूरत है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के मानद निदेशक डॉ. नारायण कुमार ने " देसिल बयना सब जन मिट्टा' की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए मातृभाषा को 'पीयूष पान' की संज्ञा दी।

प्रत्येक कार्यक्रम में अमेरिका से अनूप भार्गव, मीरा सिंह, यू. के. की साहित्यकार सुश्री दिव्या माथुर, शैल अग्रवाल, अरुणा अजितसरिया, रूस से प्रो. म्यूद्विला, प्रगति चिटनीस, सरोज शर्मा, चीन से प्रो. विवेक मणि त्रिपाठी, सिंगापुर से प्रो. संध्या सिंह, कनाडा से शैलेजा सक्सेना, खाड़ी देश से आरती लोकेश, थाइलैंड से प्रो. शिखा रस्तोगी तथा भारत से साहित्यकार भगवती प्रसाद निदारिया, शशिकला त्रिपाठी, राजेश गौतम, संध्या सिलावट, हरीराम पंसारी, परमानंद त्रिपाठी, अरविंद शुक्ल, प्रेम वीरगो, संजय आरजू, सुषमा देवी, पूनम सपरा, के.एन.पाण्डेय, रश्मि वाष्णीय, डालचंद गुप्ता, सत्य प्रकाश, सोनू कुमार, सरोज कौशिक, ऋषि कुमार, विनय शील चतुर्वेदी, जितेंद्र चौधरी, स्वयंवदा एवं अनुज आदि सैकड़ों श्रोताओं की गरिमामयी उपस्थिति रहती है। हर एक रविवार को तकनीकी सहयोग का दायित्व डॉ. मोहन बहुगुणा, डॉ. सुरेश मिश्र और कृष्णा कुमार द्वारा बखूबी संभाला गया। अंत में श्री सुरेश कुमार मिश्रा द्वारा धन्यवाद दिया गया। समूचा कार्यक्रम 'वैश्विक हिन्दी परिवार' के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन और सुयोग्य समन्वयन में पिछले लगभग चार वर्षों से अबाध गति से हर रविवार सम्पन्न होता है। यह कार्यक्रम "वैश्विक हिन्दी परिवार" शीर्षक से "यू ट्यूब" पर भी उपलब्ध है।

(वै.हि.प. की रिपोर्ट - डॉ. जयशंकर यादव)



मातृभाषा दिवस की कल्पना भाषाओं के क्षेत्र में विविधता की संकल्पना है। इस देश की भाषा, उस राज्य की भाषा जैसी एक आयामी संकल्पनाओं से दुनिया का बहुत नुकसान हुआ। भाषाओं को जातीयता से जोड़ा गया, वही जातीयता राष्ट्रीयता में परिवर्तित हो गयी। यह रूढ़िवाद और हमारी पुरातन सोच थी। डॉ. अंबेडकर ने आज़ादी के समय इसलिए भाषाओं के आधार पर राज्य निर्माण का विरोध किया। मेरी कविता की पंक्तियाँ हैं -

‘भाषा वह नहीं हो सकती,
जिसके शब्द,
हमने शब्दकोश से गुने हों,
बल्कि,
माँ के पेट से सुने हों’।

भाषा कैसे राष्ट्रीयता का आधार बन अन्य भाषाओं से शत्रुता ठान लेती है, इसका उदाहरण वर्तमान बंगलादेश, पुराने पूर्वी बंगाल से मिलता है, जहाँ उर्दू और बंगाली का वैमनस्य इस स्तर पर पहुँचा कि बंगाली भाषा के पैरोकारों को गोलियों का शिकार होना पड़ा। मैंने एक जगह लिखा है

‘भाषा तो तोड़ती है दीवार/ मैं नहीं चाहता,
कि इसकी वजह से /कोई दीवार बन जाए’।

बांग्लादेश ने संयुक्त राष्ट्र संघ में मातृभाषा दिवस के वार्षिक आयोजन का प्रस्ताव रखा। करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं, सह भाषाओं, बोलियों ने लोगों के जीवन में स्पंदन पैदा किया, उनके सपनों को पंख दिए उन्हें इंद्रधनुषी बनाया, उनकी सोच को आवाज दी, रिश्तों में प्राण भरे, एहसासों को जीवन में उतारा ...कुल मिला कर जीवन में अर्थ दिए। यह हमारी अस्मिता का उत्सव है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हमारे होने को सिद्ध करता है।

- अनिल जोशी
अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

संपादक की कलम से...



पत्रिका का तीसरा अंक आप सबके समक्ष सादर प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, विश्व पुस्तक मेले, रविवारीय कार्यक्रमों,

साहित्य उत्सव और साक्षात्कार तथा समीक्षा आदि को समेटे हुये यह अंक एक सामूहिक सत प्रयत्न है। फरवरी की 21 तारीख को 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के रूप में मनाना और अलख जगाना मातृभाषा अनुरक्षण हेतु एक महत्वपूर्ण पहल है। अपनी भाषा, माँ के पीयूष-पान सी होती है जो जन्म के प्रथम क्रंदन के बाद सबसे पहले स्थान पाती है। अतएव हमें दुनियाँ की सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए प्रयोग बढ़ाना चाहिए। भाषाएँ भविष्य के विश्व की नींव हैं। भाषा का उद्देश्य जीवन-जगत के उद्देश्य से जुड़ा है जो सत्य और आनंद की खोज कराता है। अतएव निर्मल मन और शुद्ध चैतन्य से भाषा की गंगा बहाएँ। ज्ञान के क्षेत्र में पुस्तकें ही सबसे बड़ी अस्त्र हैं। पुस्तक प्रेमी सुखी होते हैं। मित्र, पड़ोसी या कोई अन्य धोखा दे सकता है किन्तु एक अच्छी पुस्तक कभी धोखा नहीं देती। हर बार उसे पढ़ने से हमें कुछ नया ही मिलता है। 'जाकर जापर सत्य सनेहू' - चरितार्थ होता है।

पहले के अंको पर हमें प्रेरक प्रतिक्रियाएँ मिली हैं, अतएव कृतज्ञ हैं। पत्रिका को अपेक्षाकृत बेहतर बनाने एवं प्रयोजन सिद्धि हेतु सुझावों का स्वागत है।

शुभकामना सन्देश



वैश्विक हिन्दी परिवार तीन वर्ष पहले नेट समूह के रूप में बना। यह समूह था विश्व भर के हिन्दी प्रेमियों का, हिन्दी कर्मियों का। हिन्दी के संदर्भ में उनके अनुभव थे, उनकी आकांक्षाएँ थीं,

जिन्हें वे समूह में साझा करते थे। विचारणीय विमर्श के रूप में हिन्दी भाषा के सभी पक्षों को खँगाला गया - भाषा, साहित्य, मीडिया, प्रौद्योगिकी; शिक्षण, भाषा नीति, अनुप्रयोग आदि. समूह की अपार सफलता की प्रेरणा से विश्व के समस्त पाठकों के लिए वैश्विक हिन्दी परिवार की पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है, यह श्लाघनीय है, स्वागत योग्य है। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ हैं।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आदरणीय अनिल शर्मा जोशी इस मुहिम के उत्स हैं, प्रेरणा स्रोत हैं। वे वास्तविक अर्थ में संगठन निर्माता हैं और संगठन बनाकर उसका संचालन योग्य हाथों में सौंप देते हैं, जिससे अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता प्राप्त हो। मुझे पूरी उम्मीद है कि उनके कुशल नेतृत्व में पत्रिका खिल उठेगी।

शुभकामनाओं सहित,

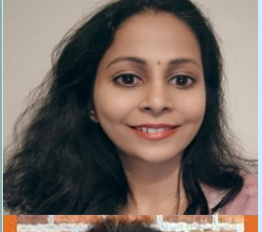
-प्रो. वी.रा. जगन्नाथन

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

वसंत ऋतु के आगमन पर: वासंती कवितायें

(11 फरवरी 2024)



वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। जब वसंत आता है तब स्नेह प्रेम और प्राकृतिक आनंद लाता है। हवा हूँ हवा हूँ वसंती हवा हूँ- स्वतः ही वासंती हवा अपनी कहानी अपनी ही जुबानी कहती है। जीवन, यौवन, ऊर्जा और उल्लास से भर जाता है। वसंत सभी को प्यारा होता है और जादू-सा असर करता है। सुप्रसिद्ध कवि डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र जी की अध्यक्षता में 11 फरवरी 2024 को वासंती स्वर फूट पड़े। उन्होंने पीली चादर ओढ़े वसंत की गहन अनुभूति कराई तथा सुमधुर कंठ से वासंती वर्णन में गायी कि- फागुन के दिन आने लगे, फागुन के। कार्यक्रम का तीस से अधिक देशों के सुधी श्रोताओं ने भरपूर आनन्द उठाया।

आरंभ में रेलवे बोर्ड में राजभाषा के निदेशक डॉ० बरुण कुमार द्वारा वसंत ऋतु की सारगर्भित पृष्ठभूमि के साथ वाग्देवी को नमन कर स्वागत किया गया। सिंगापुर से साहित्यकार आराधना झा श्रीवास्तव ने बखूबी कवितामय संचालन संभाला। ब्रिटेन से आस्था देव ने अपनी वासंती प्राकृतिक कविता में जन्म भूमि के प्रति ललक को लेकर भारत और ब्रिटेन के तुलनात्मक वसंत की प्रस्तुति दी और आदमी की बेचारगी पर वसंत के फूलों के झड़ने का एहसास कराया। आस्ट्रेलिया की रचनाकार रेखा राजवंशी द्वारा प्रकृति प्रेम सुनाया गया। तत्पश्चात यूनाइटेड किंगडम की दिव्या माथुर की बाल कविता “सिया का पहला वसंत ,की प्रस्तुति दी गई जिसमें वासंती जीवन दर्शन की बालपन अनुभूति थी। दिल्ली की कवयित्री अलका सिन्हा द्वारा शहर को छबीला दूल्हा बनाते हुए अपनी कविता में गांव और शहर के बीच वसंत से प्राकृतिक गठबंधन कराया गया। दोहाकार कवि नरेश शांडिल्य ने वसंत में प्रेम के उत्सव मधुमास का अहसास कराया और ‘हृदय मिलन की आस राधिके, आया है मधुमास ,सुनाया।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी का आदर करते हुए कालेज के समय की कविता सुनाई और ‘शब्द एक रास्ता है’, के माध्यम से जीवन दर्शन की अनुभूति कराई। उन्होंने शब्दों को प्रार्थनाओं में पिरोकर समर्पण से अभिषेक भी कराया। एक विशेष कविता ‘अस्तित्व बोध’, के माध्यम से जीवन की दूरदर्शी दृष्टि दी और बताया कि स्वयं उनके सुपुत्र ने इससे चुपचाप प्रेरणा ली। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ० लक्ष्मी शंकर वाजपेयी द्वारा वासंती शायरी सुनाई गई और आसमान से सुबह की लाली सी दृष्टि दी गई। उन्होंने सड़क पर पड़े हुए घायल को उठाने वाले को भी वासंती मनुष्य के रूपक में ढाला।

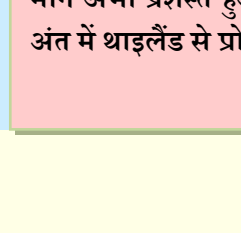
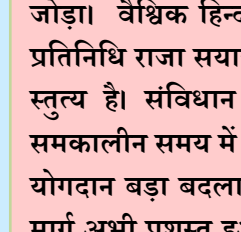
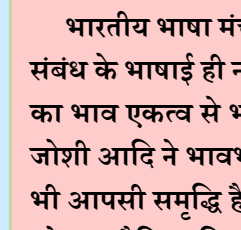
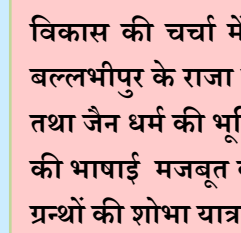
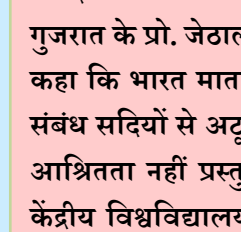
जापान से जुड़े पद्मश्री प्रो. तोमियो मिजोकामि ने प्रसन्न मुद्रा में कहा कि जापान में अभी वसंत नहीं आया है। वे भारत में इस माह वसंत में आ रहे हैं जिससे बहुत हर्षित है। श्री अनिल जोशी ने उनका अभिनंदन करते हुए कहा कि हम सब प्रतीक्षारत हैं। वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ० नारायण कुमार ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए निराला की कविता- मैं हूँ वसंत का अग्रदूत और सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता- वीरों का कैसा हो वसंत , की तर्ज पर बूढ़ों का कैसा हो वसंत की आहट सुनाई। उन्होंने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के वसंत वर्णन की ओर भी ध्यान खींचकर सार्थक जीवन जीने की सलाह दी।

अंत में प्रो० राजेश गौतम द्वारा आत्मीय भाव से धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समूचा कार्यक्रम वासंती बयार और गुणग्राह्यता सहित काव्यमयी रसधारा में सानंद सम्पन्न हुआ।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी- गुजराती संबंध : स्थिति और संभावनाएँ

(18 फरवरी 2024)



कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ० हरिसिंह गौड़ केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के पूर्व कुलपति डॉ० बलवंत जानी ने हिन्दी गुजराती के अन्तः सम्बन्धों को हजारों साल पुराना बताया। उन्होंने हेमचंद्राचार्य की 1180 की रचना का जिक्र करते हुए “देसी नाम माला,शब्दानुशासन और गुजराती की पहली कृति भरतेश्वर बाहुबली रास का भी संदर्भ दिया। डॉ० जानी ने धार्मिक संप्रदायों यथा राधास्वामी, आर्य समाज, बोहरा समाज, नाथ सिद्ध परंपरा और स्वामीनारायण के हिन्दी गुजराती भाषाई योगदान को उद्धृत करते हुए राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन तथा गांधीजी की राष्ट्रभाषा संबंधी सशक्त भूमिका की याद दिलाई। इस अवसर पर तीस से अधिक देशों के भाषा प्रेमी जुड़े थे।

आरम्भ में डॉ० बरुण कुमार ने सबका स्वागत किया। साहित्यकार डॉ० जवाहर कर्नावट ने शालीन ढंग से संचालन का बखूबी दायित्व निभाया। जापान और मॉरीशस की भाषाई यात्रा से अभी लौटे डॉ० कर्नावट ने बताया कि 21 फरवरी 1952 में ढाका में हुए भाषा आंदोलन में शहीद सात नौजवानों ने दुनियाँ को झकझोर दिया जिसमें विभाजन के बाद पूर्वी पाकिस्तान में उर्दू के स्थान पर बांग्ला लागू करने की मांग की गई थी। अतएव संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में चिन्हित किया गया।

गांधीनगर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ० अनुपा सिंह चौहान ने कहा कि हिन्दी गुजराती शौरसेनी अपभ्रंश से निकली हैं। रासो साहित्य की परंपरा के ग्रंथ गुजराती में भी हैं। नरसी मेहता, दयाराम, मीराबाई और अखा आदि जग विख्यात हैं। स्वतन्त्रता आंदोलन में हिन्दी गुजराती की भूमिका जगजाहिर है। बोलचाल, मुहावरों और साहित्यिक हिन्दी तथा फिल्मों आदि में इनके मिश्रित शब्द मिलते हैं। के० एम मुंशी, उमाशंकर जोशी, रघुवीर चौधरी, आलोक गुप्ता, राम दरश मिश्र आदि की साहित्य सेवाएँ स्तुत्य हैं। मैंचेस्टर के रूप में विख्यात अहमदाबाद और व्यापार की भाषा से भी अन्तः संबंध मजबूत हुए। उन्होंने कहावत बताई कि-ज्यां ज्यां बसे एक गुजराती, त्यां त्यां बने एक गुजरात। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय गुजरात के प्रो. जेठालाल चंद्रवाडिया ने महाकवि सुब्रमणियम भारती को उद्धृत करते हुए कहा कि भारत माता 18 भाषाओं में बोलती है। भारत की सभी भाषाओं का आपसी संबंध सदियों से अटूट है। इतिहास गवाह है कि भारतीय भाषाओं की समुचित आपसी आश्रितता नहीं प्रस्तुत की गई। हमें इसे मजबूती देने की निहायत जरूरत है। गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ० आलोक गुप्ता ने हिन्दी-गुजराती के क्रमिक विकास की चर्चा में बताया कि इनका क्षेत्र प्राचीन काल में भी विस्तृत था। उन्होंने बल्लभीपुर के राजा की साहित्य सेवा और टाड कलेक्शन को ऐतिहासिक कार्य बताया तथा जैन धर्म की भूमिका को रेखांकित किया और आठवीं सदी से आधुनिक काल तक की भाषाई मजबूत कड़ी की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उनका कहना था कि हाथियों पर ग्रन्थों की शोभा यात्रा निकालना ऐतिहासिक है।

भारतीय भाषा मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ० राजेश्वर कुमार ने कहा कि हिन्दी गुजराती संबंध के भाषाई ही नहीं बल्कि प्रगाढ़ रूप से सांस्कृतिक संबंध भी हैं। भारतीय भाषाओं का भाव एकत्व से भरा है। महर्षि दयानंद, गांधीजी ,काका साहब कालेलकर, उमाशंकर जोशी आदि ने भावभूमि तैयार की। हिन्दी और गुजराती में रूप और अंतर्वस्तु की दृष्टि से भी आपसी समृद्धि है। रामत्व ने उत्तर दक्षिण और कृष्ण ने पश्चिम पूरब को विशेष रूप से जोड़ा। वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने कहा कि राष्ट्रीयता के प्रतिनिधि राजा सयाजीराव गायकवाड ,महर्षि दयानंद और गांधीजी आदि का योगदान स्तुत्य है। संविधान का राजभाषा के लिए मुंशी आयोग फोर्मूला जगजाहिर है। समकालीन समय में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और गृह मंत्री अमित शाह का योगदान बड़ा बदलाव लाया है। मेडिकल और इंजीनियरिंग आदि की उच्च शिक्षा का मार्ग अभी प्रशस्त हुआ है। हमें समय के साथ लिपियों की एकात्मकता बढ़ानी चाहिए। अंत में थाइलैंड से प्रो. शिखा रस्तोगी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

लंदन पुस्तक मेला-24: पहली बार एक हिंदी की पुस्तक का लोकार्पण, एक ऐतिहासिक उपलब्धि



13 मार्च 2023, लंदन: नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से प्रतिष्ठित प्रदर्शनी-स्थल ओलेपिया में वाणी प्रकाशन समूह (वाणी, भारतीय ज्ञानपीठ और यात्रा बुक्स) द्वारा आयोजित लोकार्पण-समारोह कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा: न केवल कि पहली बार हिंदी की एक पुस्तक का लोकार्पण सम्पन्न हुआ, अपितु हिंदी साहित्य के लिए एक अंतरराष्ट्रीय द्वार खुल गया। ब्रिटेन के दो लेखकों: ऑक्सफ़र्ड निवासी डॉ पदमेश गुप्त की पुस्तक, डेड एंड, और बर्मिंघम निवासी डेम आशा खेमका, ओ.बी.ई की आत्मकथा, इंडिया मेड मी, ब्रिटेन एनेबलड मी, के भव्य लोकार्पण में कई देशों के लेखक जुड़े। प्रोफ़ेसर अनामिका, स्टीव हार्टले, पॉल गस्टाफ़सन, एन.बी.टी के कर्नल युवराज मलिक, वाणी कार्यकारी निदेशक डायना मुनोज़, दिव्या (वातायन-यूरोप), डॉ प्रतिष्ठित वक्ताओं ने साझा किया।

प्रकाशन समूह की अदिति माहेश्वरी-गोयल, माथुर, शिखा वाण्य शंकर खेमका इत्यादि दोनों पुस्तकों पर अपने साहित्य अकादमी प्रोफ़ेसर अनामिका ने 'डेड दार्शनिक अवधारणाओं सराहना की और इसकी गहराई पर प्रकाश डाला। कि पदमेश गुप्त में वैश्विक परिस्थितियों को नज़दीक की परख प्रशंसनीय है।



प्रतिबद्धता और व्यावसायिक जीवन की व्यस्तता के चलते उनका कहानी संग्रह अब कहीं जाकर संभव हुआ। उनकी कहानियाँ, समाज, संबंधों, सांस्कृतिक विविधता, और राजनीतिक दलदलों से लेकर धर्म और नैतिकता तक, अनेक आयामों को समेटे चलती हैं। एक छोटी किंतु महत्वपूर्ण कहानी है 'तुम्हारी शिवानी' - पैसे के बल पर अपनी पुस्तकें छपवाना और सम्पर्क के सहारे पुरस्कार पाने वालों की दुनिया में पंडित जी जैसे लोगों का साहित्य आज तक अप्रकाशित क्यों रह जाता है - जैसे सामयिक प्रश्नों से जूझते लेखकों की दुविधा से हम सभी वाकिफ़ हैं। वैसे ही जैसे हिंदू-मुस्लिम मसलों पर आधारित संवेदनशील कहानी 'कब तक' और एक डिसलेक्सिक और फ्लैट फुटेड बच्चे के संघर्ष की गाथा, 'यात्रा' से। ऐसे मुद्दों पर कलम चलाने के लिए पदमेश जी को साधुवाद; समाज में जागरूकता लाने के लिए इन विषयों पर जितना लिखा जाए, कम है।

पदमेश के बहुआयामी व्यक्तित्व और विश्वव्यापी अनुभव उनकी कहानियों को विशिष्ट और मौलिक बनाते हैं; उनकी रचनाएं समाज और सम्बन्धों की गहनता और जटिलता की व्याख्या करने का काम करती हैं। उनके लेखन में कहीं भी कथ्य या भाषा का आडम्बर नहीं है। यह संग्रह 'डेड-एंड' से आरंभ होकर पुनर्जन्म पर समाप्त होता है। डेड-एंड के बहुत से विकल्प हैं! और यही इस संग्रह का हासिल है।

-दिव्या माथुर

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रवासी मंच कार्यक्रम का आयोजन

प्रवासी एवं भारतीय साहित्य की दूरियाँ कम हुई हैं: शैलजा सक्सेना



नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम में आज कनाडा से पधारी हिंदी साहित्यकार शैलजा सक्सेना ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। उन्होंने पहले अपनी कविताएँ सुनाई और उसके बाद अपनी कहानी लेबनॉन की एक रात का एक अंश प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने खंड काव्य भीष्म के भी कुछ अंश प्रस्तुत किए। उनकी कविताओं के शीर्षक थे - कनाडा में सुबह, खुशफहमियाँ, मैं कहीं भी रहूँ, विदेश में रहती हूँ, पेड़ यह और इंद्रधनुष। उन्होंने अपनी कविताओं का समापन माँ पर लिखी एक कविता से किया। इन सभी कविताओं में जहाँ प्रवासी जीवन के संघर्ष थे, वहीं एक स्त्री होने के नाते इन संघर्षों की संवेदना का स्तर भी अलग था। रचना-पाठ के बाद उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। उन्होंने एक प्रश्न के

उत्तर में बताया कि कोविड के बाद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर कार्यक्रमों और संवाद की बढ़ोतरी के कारण एक दूसरे को समझने के नए आयाम खुले हैं। उन्होंने नाटकों और अन्य विषयों के लेखन और प्रस्तुति की बढ़ोतरी की ओर इशारा करते बताया कि अब प्रवासी रचना-संसार भी कहानी, कविताओं के अलावा नई-नई विधाओं में पंख पसार रहा है। प्रवासी एवं भारतीय साहित्य की दूरियाँ भी अब कम हुई हैं।

कार्यक्रम में प्रवासी रचना-संसार से जुड़े कई महत्वपूर्ण लोग, यथा- सुरेश ऋतुपर्ण, अनिल जोशी, राकेश पांडेय, नारायण सिंह, अलका सिन्हा, रेखा सेठी, मधुरिमा, वीरेंद्र मिश्र आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में शैलजा सक्सेना का स्वागत अंगवस्त्र एवं साहित्य अकादेमी के प्रकाशन भेंट करके किया गया।

प्रो. रेखा सेठी: शिक्षण जगत की एक महत्वपूर्ण शख्सियत (वातायन-यूके की 168वीं संगोष्ठी का आयोजन)



लंदन, दिनांक 02-03-2024: वातायन-यूके द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय में प्रोफ़ेसर और हिंदी साहित्य की यशस्वी साधक, लेखिका, संपादक और आलोचक, प्रो. रेखा सेठी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विशद चर्चा हुई। वरिष्ठ साहित्यकार, श्री अनिल शर्मा 'जोशी' की अध्यक्षता में आयोजित इस संगोष्ठी में साक्षात्कारकर्ता, यूके निवासी लेखिका, आस्था देव ने प्रो. रेखा से उनके सृजन-कर्म, निजी जीवन और साहित्यिक गतिविधियों के संबंध में अनेक प्रश्न पूछे। प्रो. रेखा ने बताया कि उनकी हिंदी में दिलचस्पी वर्ष 1984 में पैदा हुई जब वे एक क्रिश्चियन स्कूल की छात्रा थीं और स्कूल की स्वर्ण जयंती के अवसर पर स्कूल के इतिहास को केंद्रित कर एक नृत्य नाटक के लेखन, अनुवाद और वाचन में अग्रणी भूमिका निभाई। फिर इंद्रप्रस्थ कॉलेज में छात्रा रूप में वे प्रख्यात साहित्यकार इंदु जैन जी के सान्निध्य में आईं तो उनमें हिंदी भाषा और साहित्य की समझ पैदा हुई।

अपने वर्तमान रचना-कर्म के बारे में प्रो. रेखा बताया कि वे इस समय तीन पुस्तकों पर काम कर रही हैं: राउटलेज यूके के लिए हिन्दी की समकालीन स्त्री-कविता पर अंग्रेजी में एक पुस्तक, भारत की अंग्रेजी कवयित्रियों की अंग्रेजी कविताओं के हिंदी रूपांतर का संकलन और उनके द्वारा संपादित 'स्त्री-चिंतन और विमर्श'। तत्पश्चात, अंतरीपा ठाकुर-मुखर्जी और अश्विनी किन्हकर ने प्रो. रेखा सेठी द्वारा अनूदित और विरचित कविताओं के पाठ किये। शैल अग्रवाल और डॉ निखिल कौशिक द्वारा उठाए गए बिंदुओं के प्रत्युत्तर में रेखा जी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्रियों के संघर्ष और देश के आधे संसाधनों पर स्त्रियों के अधिकार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया दी। डॉ शैलजा सक्सेना ने कहा कि प्रो. रेखा जिस आत्मीय शैली से आलोचना के गहरे समुद्र में उतरती हैं, वह बहुत नयापन लिए हुए होता है। डॉ मिलेना ब्रातिस्वा ने सोफ़िया विश्वविद्यालय-बुलगारिया में आयोजित गोष्ठी में रेखा जी द्वारा कृष्णा सोबती के साहित्य पर प्रस्तुत शोध-पत्र की सराहना की।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अनिल शर्मा 'जोशी' ने कहा कि प्रो. सेठी शिक्षण जगत की एक महत्वपूर्ण शख्सियत हैं जिन्होंने तीन प्रख्यात लेखकों नामतः मुंशी प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई और बालमुकुंद गुप्त पर केंद्रित पुस्तकों का संपादन किया है, ऐसी पुस्तकों का निर्माण साहित्य जगत को उनका विशिष्ट अवदान है। उन्होंने प्रो. रेखा के अनुवाद-कार्य और स्त्री विमर्श में उनकी प्रमुख भूमिका की भी चर्चा की। इस संगोष्ठी की सूत्रधार तथा 'वातायन-यूके' की संस्थापक दिव्या माथुर ने कहा कि प्रो. रेखा का साहित्यिक योगदान इतना व्यापक है कि इस संबंध में एक और संगोष्ठी आयोजित की जानी चाहिए।

(रिपोर्ट-डॉ. मनोज मोक्षेंद्र)

विश्व पुस्तक मेला की झलकियाँ



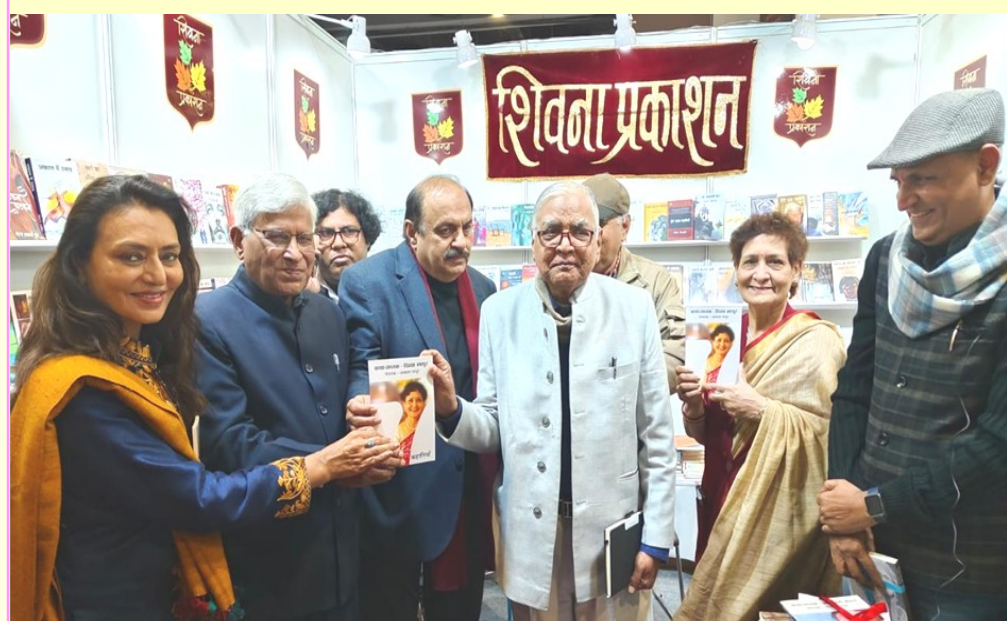
संसद सदस्य और पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की पुस्तक का विश्व पुस्तक मेले में लोकार्पण जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे, वैश्विक हिंदी परिवार न्यास के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी व अन्य विद्वान उपस्थित रहे।



अनिल शर्मा 'जोशी' की पुस्तक 'प्रवासी लेखन' का लोकार्पण: अलका सिन्हा, सत्यकेतु सांकृत, रेखा सेठी, प्रेम जनमेजय, नारायण कुमार, मृदुल कीर्ति।



शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की नवनियुक्त अध्यक्ष प्रो. पंकज मित्तल जी, पदग्रहण कराते हुए न्यास के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी जी, मा. सुरेश गुप्त जी, मा. अग्रवाल जी एवं डॉ. राजेश्वर जी



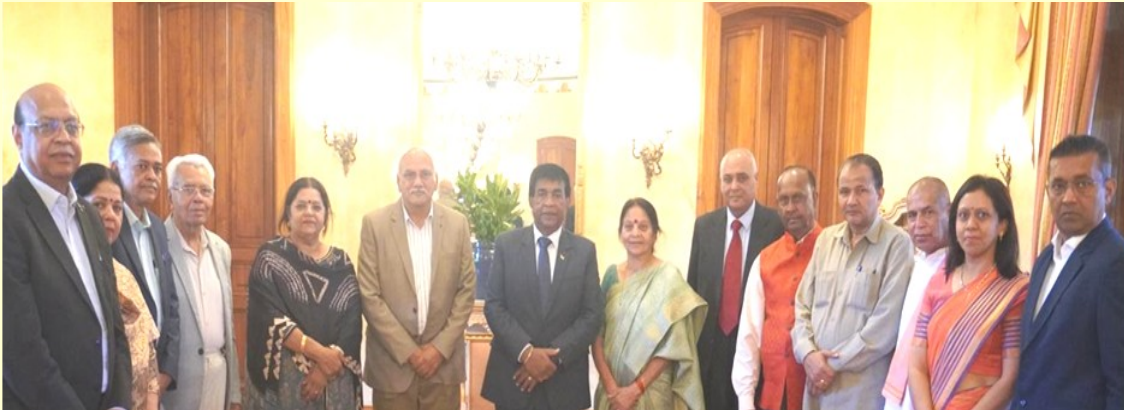
विश्व पुस्तक मेले में 'शिवना प्रकाशन' द्वारा दिव्या माथुर के कहानी संग्रह, कथा सप्तक, के लोकार्पण पर मुख्य अतिथि थे: डॉ प्रेम जनमेजय, तेजेन्द्र शर्मा, सुबीर पंकज, डॉ फ़ारूकी अफ़रीदी, प्रताप



विश्व पुस्तक मेले में दिव्या माथुर के उपन्यास 'तिलिस्म' के लोकार्पण पर मुख्य वक्ता थे: डॉ जितेंद्र श्रीवास्तव, प्रो सत्यकेतु सांकृत, अनिल शर्मा 'जोशी' और प्रत्यक्षा सिन्हा



जापान के सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान श्री तोमिओ मिजोकामि पर 'ओसाका विश्वविद्यालय' के हिंदी प्राध्यापक डॉ. वेदप्रकाश सिंह द्वारा संपादित पुस्तक ' तोमिओ मीजोकामि व्यक्तित्व और रचना समग्र' का लोकार्पण ओसाका विश्वविद्यालय और जापान में भारत के प्रधान कौंसलावास के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। ओसाका विश्वविद्यालय में आयोजित भव्य समारोह में जापान में भारत के प्रधान कौंसल श्री निखिलेश गिरी जी, प्रो.अकिरा ताकाहाशि , श्री तोमिओ मिजोकामि ,डॉ. जवाहर कर्णावट और प्रो श्याम सुंदर पांडे के अलावा 100 से अधिक विद्यार्थी, प्राध्यापक और हिंदी प्रेमियों की भागीदारी रही। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के डॉ. हरजेन्द्र चौधरी से डॉ ताकाहाशि ने हिंदी शिक्षण के अनुभव पर ऑनलाइन बातचीत भी की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के हिंदी विद्यार्थियों ने रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए



'विश्व रंग' की टीम ने आज मॉरिशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम पृथ्वीराज सिंह रूपेन से उनके निवास पर सौजन्य भेंट की। विश्व रंग के निदेशक एवं रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने राष्ट्रपति महोदय को अपनी पुस्तक एवं विश्व रंग पुस्तिका भेंट की। आपने टैगोर विश्वविद्यालय की गतिविधियों तथा विश्वरंग के बारे में भी राष्ट्रपति महोदय को अवगत कराया। इस अवसर पर आर्य समाज मॉरिशस के प्रमुख श्री उदयनारायण गंगू, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉक्टर माधुरी रामधारी ,विदुषी मृदुल कीर्ति, विश्वरंग के अंतरराष्ट्रीय समन्वयक श्री अरविंद चतुर्वेदी, संयोजक डॉ. जवाहर कर्णावट, 'इलेक्ट्रानिकी आपके लिए' की कार्यकारी संपादक डॉ. विनीता चौबे, श्रीमती संगीता चतुर्वेदी एवं मॉरिशस के विशिष्ट गणमान्य महानुभाव भी विशेष रूप से उपस्थित रहे



दक्षिण पूर्व एशिया के देशों का अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन (2 से 4 फरवरी 2024) का शुभारंभ टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के तत्वाधान में टोक्यो स्थित भारतीय दूतावास के सभागृह में हुआ। जापान के भारतीय राजदूत श्री सिबी जॉर्ज के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री जायसवाल, विश्वविद्यालय की अध्यक्ष प्रो. कायोको हयाशी, हिंदी विभाग अध्यक्ष प्रो. योशिफुमि मिजुनो प्रो. तोमियो मिजोकामि आदि भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर सम्मेलन स्मारिका तथा प्रोफेसर हिदेआकि इशिदा के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'हिंदी साहित्य' का लोकार्पण भी हुआ। विद्यार्थियों ने हिंदी नाटिका तथा गीत प्रस्तुत किए। सम्मेलन में जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, भारत आदि देशों के प्रतिनिधियों की भागीदारी रही। 13 फरवरी को टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज में दक्षिण पूर्व मध्य एशिया के देशों में हिंदी भाषा एवं शिक्षण पर विस्तार से चर्चा हुई। सम्मेलन का संयोजन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रो. सूरज प्रकाश बडत्या ने किया।



अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, दौलतराम कालेज



झारखंड में राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन

सर्जनात्मकता का प्रिज्म है 'समीक्षा के भाषिक आयाम'

वरुण कुमार जी की यह पुस्तक हिन्दी में समीक्षा के भाषिक आयाम विषयक विवेचन की गतानुगतिक रुढ़ि को तोड़ती, समीक्षा में भाषा-विमर्श के नए स्कोप को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक साहित्य एवं भाषा के प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करती है। इस पुस्तक में वरुण

कुमार जी ने उन बेचैनियों और शंकाओं को स्वर दिया है जिनके प्रति हिन्दी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन जगत उदासीन रहा।

इस पुस्तक में संकलित निबंधों को दो संदर्भों के अन्तर्गत रखा गया है। पहला संदर्भ है- 'कृति और भाषा' जिनमें कथात्मक गद्य को काव्य के बरअक्स देखने की कोशिश की गई है। दूसरा संदर्भ है- 'भाषा बनाम समाज' जिनमें भाषा, साहित्य, समाज और सरकार के आपसी संबंधों पर चिन्ता की गई है। इन सबके बीच से उपजे गंभीर प्रश्नों को पाठकों के मध्य रखा गया है। यह पुस्तक भाषाई उपकरणों के महत्व को जहाँ पूर्ण रूप से रेखांकित करने में सफल रही है वहीं देश की भाषा से देश की सरकार के संबंध तथा हिन्दी भाषा की अवस्था और उसके भविष्य को वह क्या रूप दे रही है जैसे प्रश्नों पर गंभीर चर्चा करती है। अपनी पुस्तक 'समीक्षा के भाषिक आयाम' के माध्यम से वरुण कुमार जी सहज रूप से यह बताने में सफल रहे हैं कि भाषा का पक्ष कविता ही नहीं, गद्य की समीक्षा में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सार्थकता भावकीय प्रतिभा से कविता और गद्य

की कलावटी गाँठों को खोलते हुए उसके अर्थ गह्वर में प्रवेश करने से संभव हो पाती है।

मिस नवोत्तमी नामक पश्चिमी आलोचिका ने वाक्य संरचना को सर्जनात्मक काव्य भाषा और कथा भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई माना है। इस संदर्भ में वरुणजी की यह पुस्तक यह पूर्ण रूप से स्पष्ट करती है कि कविता या गद्य की सही पहचान-परख उसके तलान्वेषित कथ्यों और अर्थच्छवियों की बहुआयामिता पर निर्भर है। भाषा (काव्य और गद्य) का अध्ययन केवल 'शब्दकेन्द्रित' नहीं होता, वह संरचना (वाक्य संरचना) केन्द्रित भी होता है। भाषा (काव्य या गद्य) एकायामिता से बहुआयामिता तक अस्तित्वमय रहती है। भाषा के सामान्य वाचन में जो प्रायः अनुपस्थित रहता है, उसे ही उपलब्ध करने के क्रम में उसकी पुनःसर्जना की जाती है।

इस पुस्तक में सर्जनात्मक प्रतिभा और सामाजिक विरासत की भाषाई संदर्भ में बहुत खूबसूरती से चर्चा हुई है। रचना का नवीन होना-जिसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं पर्याप्त नहीं। आवश्यकता है उस नए का मूल्य भी हो। इतना ही नहीं वरुणजी साहित्य में लय की सार्थकता और उसके निर्धारक तत्व पर विस्तार से चर्चा करते हैं और बहुत ही सहज रूप में पाठकों तक यह बात पहुँचाने में सफल रहे हैं कि अर्थ ही लय का सबसे प्रमुख निर्धारित तत्व है। कई उदाहरणों द्वारा इस पुस्तक में यह बात स्थापित की गई है कि लय का अर्थ के साथ एक तनाव का रिश्ता भी हो सकता है, लय के आगे बढ़ने और अर्थ के स्तर के ठहरने की आवश्यकता के बीच।

वरुण कुमार जी आधुनिक काव्य की बढ़ती गद्यात्मकता पर चिन्ता करते हैं कि आज का कवि विभिन्न काव्यात्मक उपादानों से मुक्ति की आड़ में अपने ज्ञान और कल्पना और संयोजन क्षमता की दुर्बलता को छिपाना चाहता है। इस पुस्तक में जहाँ एक ओर साहित्य की प्रभाव क्षमता और हिन्दी समाज के रेशे-रेशे को खोलकर रखा गया है, वहीं दूसरी ओर 'वेनिस का सौदागर: यहूदी घृणा की जड़े' और 'हिडिम्बा: एक अलक्षित प्रणय गाथा' जैसे निबंध पाठकों को रोमांचित करते हैं।

वरुण जी 'भाषा और समाज' के संदर्भ के अन्तर्गत जहाँ अभिव्यक्ति के खतरों को उठाना जरूरी मानते हैं वहीं हिन्दी के यथार्थ और आदर्श से पाठकों को रू-ब-रू कराते हैं। एक पूरा निबंध ही हिन्दी के सरलीकरण या हिन्दी के अंग्रेजीकरण पर लिखा गया है। सरलता की यह गलत अवधारणा पढ़े-लिखे लोगों के मन में बनती जा रही है जो हिन्दी के अस्तित्व पर खतरा है।

यह पुस्तक लिपि के स्तर पर, हिंदी के अंग्रेजीकरण पर, राजभाषा, जनभाषा, विश्वभाषा संबंधित विडम्बनाओं पर तथा संसद में हिन्दी के पहले संबोधन पर तथ्यात्मक और रोचक रूप में बहुत कुछ पाठकों को ग्रहण करने के लिए देती है।

यह पुस्तक कहीं मनोविश्लेषणात्मक प्रतिमान के आधार पर, तो कहीं शैलीवैज्ञानिक प्रतिमान के आधार पर, कहीं विसंरचनात्मक प्रतिमानों के आधार पर तो कहीं अर्थवैज्ञानिक प्रतिमानों के आधार पर और कहीं कूट-विश्लेषण के आधार पर काव्य और गद्य पाठों को अर्थोन्वेषित करती है।

'समीक्षा के भाषिक आयाम' माँग करती है कि इस दिशा में साहित्य-विवेक से सम्पन्न पाठक आगे आएँ और समीक्षा के भाषिक आयाम को विकसित करने में अपना योगदान दें।

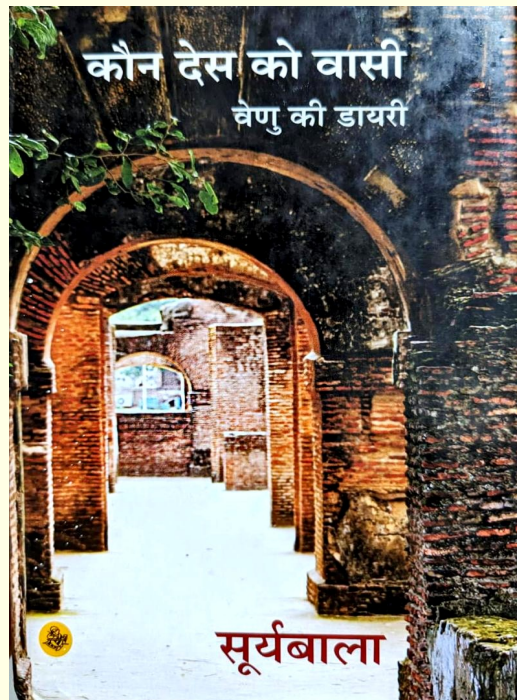
इस पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त हिन्दी में काव्य और गद्य दोनों के भावन और बोध की वर्तमान स्थिति बदलेगी, इसका मुझे पूरा विश्वास है। 'समीक्षा के भाषिक आयाम' के जिज्ञासु पाठकों के लिए हिन्दी में यह एक पठनीय, मननीय और संग्रहणीय पुस्तक है।

(समीक्षक-प्रो.स्वाति श्वेता)

कौन देश को वासी, वेणु की डायरी

प्रवासी भारतीय होना भारतीय समाज की महत्वाकांक्षा भी है, सपना भी है, कैरियर भी है और सब कुछ मिल जाने के बाद नास्टेल्लिया का ड्रामा भी। लेकिन कभी कभी वह अपने आप को, अपने परिवेश को, अपने समाज को देखने की एक नई दृष्टि मिल जाना भी होता है। अपनी

जन्मभूमि से दूर किसी पराई धरती पर खड़े होकर वे जब अपने आपको और अपने देश को देखते हैं तो वह देखना बिल्कुल अलग होता है। भारतभूमि पर पैदा हुए किसी व्यक्ति के लिए यह घटना और भी मानीखेज हो जाती है कि हम अपनी सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों और इतिहास की लंबी गुंजलकों में घिरे और किसी



मुल्क के वासी के मुकाबले कतई अलग ढंग से खुद को देखने के आदी होते हैं। उस देखने में आत्मलोचन बहुत कम होता है। वह धुंधलके में घूरे रहने जैसा कुछ होता है। विदेशी क्षितिज से वह धुंधलका बहुत झीना दीखता है और उसके पार बसा अपना शेष बहुत साफ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार सूर्यबाला जी के इस उपन्यास में अमेरिका -प्रवास में रहे वेणु और मेधा खुद को और अपने पीछे छूट गई जन्म भूमि को ऐसे ही देखते हैं। उन्हें अपनी मिट्टी की अबोली कसक प्रायः चुभती रहती है। वे अपने परिवार जनों और उनकी स्मृतियों को सहेजे जब स्वदेश प्रत्यावृत्त होते हैं तो उनकी परिकर परिधि में आए जन उनके रहन-सहन, आत्मविश्वास से प्रभावित होते हैं, किन्तु वेणु और मेधा के दुख, उदासी और अकेलापन नेपथ्य में ही रहते हैं। नई पीढ़ी की आकांक्षाओं में सिर्फ और सिर्फ बहुत सारा धनोपार्जन ही है ताकि एक बेहतर जिंदगी जी सके जबकि अमेरिका गए अनेक प्रवासी भीतर ही भीतर कई संग्राम लड़ते हैं। कैरम की गोटियों को छिटका देने वाली गोटियाँ हैं, पर निर्मम चाहें !

(प्रस्तुति - डॉ. जयशंकर यादव)



गज़ल



वो सितमगर है तो है
अब मेरा सर है तो है

आप भी हैं मैं भी हूँ
अब जो बेहतर है तो है

जो हमारे दिल में था
अब ज़बाँ पर है तो है

दुश्मनों की राह में
हूँ मेरा घर है तो है

एक सच है मौत भी
वो सिकन्दर है तो है

पूजता हूँ बस उसे
अब वो पत्थर है तो है

- विज्ञान ब्रत



ओसका विश्वविद्यालय, जापान के प्रोफेसर एमेरिटस तोमियो मिजोकामि जापान की धरती पर हिन्दी का अलख जगाने वाले एक सशक्त एवं प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार हैं जिन्हें वर्ष 2018 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में दिए योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। आपको हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

इस अंक में हिन्दी की प्रगति के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके डॉ. जवाहर कर्नावट जी (सलाहकार, प्रवासी साहित्य शोध केंद्र, टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल) की तोमियो मिजोकामि जी से हुई बातचीत के कुछ अंश उद्धृत हैं।

मिजोकामि जी से बातचीत का आरम्भ डॉ. जवाहर कर्नावट जी ने हिन्दी विषय चुनने के पीछे की क्या प्रेरणा रही, से किया। मिजोकामि जी को बचपन से ही नई भाषा सीखने की इच्छा रही है। उन्होंने बताया कि इसके पीछे तीन कारण रहे। हिन्दी भाषा ने जहाँ एक ओर उनके मन में उठ रहे जिज्ञासापूर्ण भाषिक माहौल पर दस्तक दी, वहीं पंडित नेहरू की तटस्थता और महात्मा गाँधी के सत्य एवं अहिंसा के सिद्धान्त ने उन्हें आकर्षित किया। भारत उनके लिए एक रहस्यमय देश रहा है और इसी रहस्य को करीब से जानने के लिए वह भारत आए और 1983 में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषा विभाग से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

बातचीत आगे बढ़ी और यह जानने की उत्सुकता भी बनी कि मिजोकामि जी को हिन्दी सीखते हुए किन परेशानियों का सामना करना पड़ा तथा उस समय जापान में हिन्दी शिक्षण की क्या स्थिति रही? उस समय को याद करते हुए मिजोकामि जी ने बताया कि उन्हें आरम्भ में पाठ्य-पुस्तक, शब्द-कोश आदि से संबंधित कई प्रकार के अभाव झेलने पड़े। हिन्दी लेखन में भी उनको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इतना ही नहीं अच्छे भारतीय अध्यापक के साहचर्य का भी अभाव रहा। जहाँ तक जापान की बात थी तो वहाँ हिन्दी शिक्षण को लेकर विशेष रुझान न था। गंभीरता से पढ़ने वाले विद्यार्थी बहुत कम ही थे।

हिन्दी में उच्च अध्ययन के लिए भारत आने पर उन्हें कैसा महसूस हुआ, यह प्रश्न पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि आरम्भ में वह दो वर्ष इलाहाबाद में रहे और फिर विश्वभारती गए। विश्वभारती में हिन्दी के लिए उन्हें अनुकूल एवं पारिवारिक वातावरण मिला। दिल्ली में पी.एच.डी. करते समय थोड़ी मुश्किल हुई। बातचीत के दौरान इस तथ्य पर भी चर्चा हुई कि मिजोकामि जी

पद्मश्री से सम्मानित प्रो. तोमियो मिजोकामि



की साहित्यिक अभिरुचि का आधार हिन्दी नाटक कैसे बना। उन्होंने बताया कि अपने अध्यापन जीवन के अंतिम 10 वर्षों में वे कैसे नाटक मंचन में सक्रिय हुए जिसे उन्होंने एक विधा के रूप में सीखा। चूंकि नाटक बोलचाल की हिन्दी सीखने में बहुत सहायक थे, शायद इसीलिए उन्होंने भाषा शिक्षण के लिए नाटकों को चुना। हिन्दी को

वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय भाषा बनाने में आने वाली चुनौतियों पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी के आगे अंग्रेजियत सबसे बड़ी चुनौती है। जहाँ एक तरफ भारत अंग्रेजियत के मोहपाश से मुक्त हो ही नहीं पा रहा वहीं दूसरी तरफ जापान अपनी मातृभाषा से विशेष मोह और लगाव करता है। भारतीय सरकारी तन्त्र की अंग्रेजियत भी इसमें सबसे बड़ी रुकावट है।

वर्तमान में जापान के छात्रों में हिन्दी पढ़ने को लेकर रुझान पर पूछने पर उन्होंने बताया कि जो भी छात्र हिन्दी पढ़ना चाहते हैं उनमें हिन्दी के प्रति गत 50 वर्षों में निरन्तर लगाव बढ़ा है। जापान के कई मेधावी विद्यार्थी आज हिन्दी शिक्षण में हैं और हिन्दी प्रचार में अपना योगदान दे रहे हैं। वे आसानी से भारत भी आ सकते हैं। जापान में हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी फिल्मों भी अपना योगदान दे रही हैं।

जापान में हिन्दी शिक्षण में प्राध्यापकों के विषय में उल्लेख करते हुए मिजोकामि जी ने जानकारी दी कि जापान में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन के दो मुख्य केन्द्र हैं- तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय जिसमें दो जापानी अध्यापक और एक भारतीय अध्यापक कार्यरत हैं तथा ओसाका विश्वविद्यालय का विदेशी अध्ययन संकाय जिसमें तीन जापानी अध्यापक और एक भारतीय अध्यापक कार्यरत हैं। हिन्दी संबंधित पाठ्य-सामग्री भारत एवं अन्य देशों से मँगवाई जाती है। इन दोनों विश्वविद्यालयों में अच्छे पुस्तकालय भी हैं।

अपने इस साक्षात्कार में मिजोकामि जी ने इस बात का भी उल्लेख किया कि कैसे उन्होंने अपने ई-मेल से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को अपनी जापान यात्रा में हिन्दी में भाषण देने हेतु आग्रह किया। उन्होंने उस दुर्लभ क्षण को याद करते हुए कहा कि वहाँ आने पर मोदी जी ने उनकी तरफ इशारा करते हुए कहा था कि 'आपने ही मुझे हिन्दी में बोलने को कहा था न'। वह क्षण गौरवान्वित करने वाला क्षण था।

अंत में जवाहर जी द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलनों की प्रासंगिकता पर पूछे जाने पर मिजोकामि जी ने कहा कि यह सही मायने में एक शैक्षिक सम्मेलन नहीं है। यह केवल हिन्दी का त्यौहार बनकर रह गया है जहाँ कोरी घोषणाएँ की जाती हैं। अब तक आयोजित हुए विश्व हिन्दी सम्मेलनों पर उनका कहना था कि वह कितने सफल रहे, इस पर विचार करना जरूरी है।

संरक्षक

अनिल शर्मा 'जोशी'

मुख्य परामर्शदाता

डॉ. शिव कुमार सिंह, पुर्तगाल

संपादक

डॉ. जयशंकर यादव

सहयोग

प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग

कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर,

नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए

ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109